लॉक डाउन को सफल बनाता गांव

रामेश्वरी बघेल
ग्राम-भैंसमुण्डी, भानुप्रतापपुर,
जिला-कांकेर, छत्तीसगढ़

कोरोना संकट से उपजे लॉक डाउन ने एक तरफ संपूर्ण जीव-जगत को भले ही कुछ समय के लिए संकट में डाला हो, लेकिन सच कहें तो इसने हमारे जीने के तरीके को भी बदल दिया है। कहने को तो इसने हमें घर पर रहने को मजबूर कर दिया है, लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू यह है कि लोग काफी समय बाद अपने परिवार के साथ पल पल समय गुज़ार रहे हैं। इस भागदौड़ की मशीन वाली ज़िंदगी ने लोगों को इतना व्यस्त कर दिया था कि उनके पास अपनों के लिए समय नहीं बचा था। इतना ही नहीं सबको अपनी मेहनत के एक-एक दाने का मोल पता चल गया। वहीं इस बीमारी ने लोगों को ऐसे बुरे संकट के वक्त न केवल कम सुविधाओं में भी जीना सिखा दिया है बल्कि उन्हें बीमारी के प्रति जागरूक भी बना दिया है।

इस लॉक डाउन में खासकर ग्रामीण इलाकों की बात करें, तो लोगों द्वारा कोरोना महामारी से निपटने के लिए गजब की सख्ती बरती गई। प्रधानमंत्री द्वारा जैसे ही 21 दिन तक पहली लॉकडाउन की घोषणा की गई, उसी क्षण से कांकेर जिले के लगभग सभी ग्राम पंचायतों ने बड़ी सावधानी बरतते हुए इसका कड़ाई से पालन करने के निर्देश जारी किये। उसी तारतम्य में भानुप्रतापपुर के ग्राम भैंसमुण्डी के लोगों ने भी अपने गांव की सीमाओं को पेड़ों के टहनियां काटकर सील कर दिया। ताकि बाहरी लोग दूसरी जगह से गांव में प्रवेश न कर पाएं। पूरे गांव में मुनादी करवा दी गई कि लॉक डाउन तक गांव के सभी बाजार बंद रहेंगे और कोई भी व्यक्ति बिना काम के घर से बाहर नहीं निकलेगा। इसके साथ-साथ लोगों से ये भी अपील की गई कि,लोग एक दूसरे से ज़्यादा संपर्क में न आएं। यदि आवश्यक हो तो सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें।

इस अचानक बंद से लोग हड़बड़ा जरूर गये थे। लेकिन कुछ दिन बाद आवश्यक सामग्री, राशन-पानी मिलने लगने से थोड़ी राहत पहुंची। दूसरे गांव के लोगों और बाहर से किसी भी व्यक्ति को गांव में प्रवेश नहीं करने दिया गया। गांव में साफ-सफाई को और भी अधिक महत्व दिया जाने लगा। कोरोना महामारी का संक्रमण गांव में ना फैले इसके लिए ग्रामवासी भी सरपंच द्वारा दिये निर्देशों का बखूबी पालन करने लगे। आज इसी का परिणाम है कि अपने छोटे से गांव में सभी लोग सुरक्षित और स्वस्थ्य हैं। मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकती कि पढ़े-लिखे शहरी लोगों से ग्रामीण ज्यादा समझदार होते हैं। भले ही उनके पास उचित संसाधनों का अभाव होता है, लेकिन शासन-प्रशासन के दिये निर्देशों का पालन बड़े ही ईमानदारी से करते हैं। ये उदाहरण आज सबके सामने है। जिससे सभी को सीख लेनी चाहिए।

जहां एक ओर लॉकडाउन होने से शहरी इलाकों के लोग हफ्ते भर की राशन लेने के लिए मारामारी करने लगे थे। सोशल डिस्टेसिंग की जरा भी कद्र नहीं कर रहे थे। जगह-जगह बड़ी संख्या में लोग इकट्ठे दिखते थे। जिससे कई बार प्रशासन को सख्तियां भी दिखानी पड़ी थी वहीं दूसरी ओर ग्रामीण जनता जिसे निरक्षर और असभ्य माना जाता है, इन हिदायतों को न केवल ज़रूरी माना बल्कि जागरूकता दिखाते हुये अपने घरों में ही बंद रहे। हालांकि इसी तरह आगे भी जागरूक रहने की जरूरत है। पर इस महासंकट की घड़ी में भी सावधानी बरतने के लिए गांव की जनता को सलाम...।